Impact Factor – 6.261 | Special Issue - 172 | March 2019 | ISSN – 2348-7143
UGC Approved Journal List No. 40705

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

DEVELOPMENT OF QUALITY CULTURE IN HEIs

- GUEST EDITOR -
Prin. Dr. S. Y. Hongekar

- CHIEF EDITOR -
Dr. Dhanraj T. Dhangar

- EXECUTIVE EDITOR OF THE ISSUE -
Dr. Shruti M. Joshi
Dr. Kailas S. Patil | Mr. Sunny S. Kale

Printed By : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

For Details Visit To : www.researchjourney.net

Scanned by CamScanner

Impact Factor – 6.261 ▪ Special Issue - 172 ▪ March 2019 ▪ ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal
Multidisciplinary International E-research Journal

DEVELOPMENT OF QUALITY CULTURE IN HEIs

... Guest Editor ...
Prin. Dr. S. Y. Hongekar
Vivekanand College (autonomous), Kolhapur

... Executive Editor of this Issue...
Dr. Shruti M. Joshi
Dr. Kailas S. Patil **Mr. Sunny S. Kale**

... Chief Editor ...
Dr. Dhanraj T. Dhangar

Printed by : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

Scanned by CamScanner

:CONTENTS:

1. **Development of Quality Culture in HEIs and Its Impact** 1
Dr. Suresh Shrirang Patil

2. **Role of Internal Quality Assurance Cell (IQAC) In Quality Enhancement of Higher Education Institutes In India** 4
Mr. Umesh D. Dabade, Dr. Madhavi V. Charankar

3. **Issues in Designing of the Syllabus for Effective Courses in Higher Education: Communication** 7
Rahul A. Kalel, Sarita D. Shinde

4. **Best Practices: Benchmarking Approach for Quality Enhancement in HEIs** 9
Banasode R. S., Dr. Kulal S. R.

5. **Performance Evaluation of IQAC:The Responsibility of The Principal And Coordinator** 12
Amol G. Sonawale

6. **Challenges in Developing Quality Culture in Higher Education Institutes in India: A Review** 14
Dr. S. G. Gavade

7. **Role of ICT based Teaching Methods in Higher Education** 18
Dr. M. S. Patil

8. **Role of ICT in College Feedback System** 22
Mr. Prakash Nhanu Talankar

9. **Rethinking on Qualitative Teaching-Learning Process** 25
Mrs. Shailaja A. Changundi

10. **A Critical Study Of Third Criterion Of National Assessment And Accreditation Council** 29
Mr. Salman A. Kaktikar, Ms. Mayakumari M. Purohit

11. **Innovating Education And Educating for Innovation: A powerful approach of ICT** 32
S. G. Patil*, N. A. Patel**, S. H. Nadaf**

12. **The Examination Reforms in Higher Education System in India** 36
Dr. Trishala kadam

13. **Information and Communication Technologies (ICT) in Higher Education and Learning** 39
Tekchand Chetanlal Gaupale

14. **Use of ICT in Teaching and Learning of English Language and Literature** 41
Dr.Satish R. Ghatge, Sambhaji S. Shinde

15. **NAAC Criterion VII: Problems and Perspectives** 45
Dr. S. R. Kattimani

16. **Quality Enhancement in Teaching and Learning through Experiential Learning** 48
Dr. S. D. Shirke

17. **Use of Mathematical Software's for better understand and well writing Mathematics** 51
S. T. Sutar, S. P. Patankar

18. **Student Satisfaction Survey: Role and Challenges in Higher Education Institutions in India** 52
Prin. Dr. Udaysinh Manepatil, Prof. Avadhut B. Nawale.

१९. **भारतीय शिक्षणातील परिवर्तन व आव्हाने** ५४
प्रा. हरिश्चंद्र व्यंकटराव चामे

२०. **उच्च शिक्षा में गुणवत्ता विचार** ५६
डॉ. दीपक रामा तुपे

Printed by : PRASHANT PUBLICATIONS

Scanned by CamScanner

ISSN : 2348-7143 March 2019
RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor (SJIF) - 6.261 | *Special Issue 172 :* Development of Quality Culture in HEIs

उच्च शिक्षा में गुणवत्ता विचार

डॉ. दीपक रामा तुपे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज (स्वायत्त), कोल्हापुर.

प्रस्तावना :

शिक्षा ज्ञान की द्योतक है। किसी भी राष्ट्र की सही पहचान शिक्षा से होती है। शिक्षा में जितनी गुणवत्ता होगी, उतनी ही सामाजिक उन्नति होगी। शिक्षा देश एवं राष्ट्र निर्माण की नींव रखती है। गुणवत्ता ही शिक्षाविदों और छात्रों को आकर्षित करती है। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता से तात्पर्य यह है कि उच्च शिक्षा का उन समस्त मानकों पर खरा उतरना है, जिसको ध्यान में रखकर यह प्रदान की जा रही है। शिक्षा की गुणवत्ता मानव के आंतरिक और बाह्य रूप को साकार करती है। रोहित धनकर के मतानुसार ''शिक्षा एक प्रक्रिया है, जो शिक्षार्थी को आमूल परिवर्तित कर देती है।''[१] स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का मूल उद्देश्य ही है कि व्यक्तित्व विकास और चारित्र्य निर्माण। अर्थात् शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करती है और व्यक्ति को चरित्रवान भी बना देती है।

मानवीय मूल्यों की स्थापना :

मानव जीवन में मूल्यों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। मानवी मूल्य मानव जीवन के लक्ष्य से संबंधित होते हैं और यही लक्ष्य हासिल करने के लिए व्यक्ति जो कल्पना करता है, उन्हें मूल्य कहा जाता है। मूल्य से मानव जीवन को दिशा एवं प्रेरणा मिलती है। मूल्य इन्सान को इन्सान बना देते हैं। मूल्य ही व्यक्ति का जीवन समृद्ध बना देते हैं और सुसंवाद की ओर ले जाते हैं। व्यक्ति का जीवन सुसंवादी होने के लिए मूल्युयक्त जीवन जीने की आवश्यकता पड़ती है। मूल्यों का सीधा संबंध अंतक्रिया से होता है और अंतक्रिया शिक्षा से निर्मित होती है। मूल्यनिर्मिति एवं मूल्य संवर्धन - दोनों मानव प्रयोजन के अनिवार्य अंग है। मूल्य बहुत विस्तृत संकल्पना है। नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य, धार्मिक मूल्य तथा अन्य मूल्य अंतिमत: मानवी मूल्यों में परिवर्तित होते हैं। मानवी मूल्यों का परिपाक शिक्षा के व्यवहार से होता है। यदि ''नागरिकों में इन मूल्यों का अभाव होगा तो देश की स्वतंत्रता खतरे में पड़ सकती है।''[२] सूचना प्रौद्योगिकी के युग में मानव मूल्यों खो रहा है। इन्सान की मानवता एवं संवदेना गायब हो रही है। इन्सान सामाजिक रिश्ता खोता जा रहा है। हत्या, चोरी, डकैती, रिश्वतखोरी, सूदखोरी जैसी सामाजिक विकृतियों से समाज जर्जर बनता जा रहा है। संस्कार मानव को मानव बनाने में विफल हो चुके हैं। इसलिए दिशाहीन मानव जीवन को उचित दिशा देने हेतु शैक्षिक मूल्य प्रभावी रूप में काम करते हैं। समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना शिक्षा से हो सकती है, इस दृष्टि से मानव जीवन में उच्च शिक्षा में गुणवत्ता का होना महत्वपूर्ण है।

कौशल विकास :

शिक्षा की सफलता शिक्षा से प्राप्त नौकरी और उद्यमशीलता पर निर्भर करती है। बदलाव के दौर में केवल पारंपरिक शिक्षा से छात्रों का सर्वांगीण विकास नहीं होगा। छात्रों का भावी जीवन सुरक्षित बनाने के लिए कौशल आधारित शिक्षा की आवश्यकता है। परंपरागत पाठ्यक्रम के साथ-साथ अलग-अलग कौशल आत्मसात करने पर रोजगार की संभावनाएँ बढ़ जाती है। शिक्षा में बढ़ती बेरोजगारी कम करने के लिए उसमें कौशल विकास पर ध्यान दिया जा रहा है। ''शिक्षितों में बढ़ती हुई बेरोजगारी से माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा में रोजगार-योग्य कौशलों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। किसी भी देश के विकास हेतु कुशल जनशक्ति को बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। यह सर्वविदित है कि व्यावसायिक शिक्षा और कौशल से व्यक्तियों की उत्पादकता, नियोक्ताओं की लाभ अर्जकता और राष्ट्रीय विकास में वृद्धि होती है।''[३] हर छात्र में कौशल विकसित करने की दृष्टि से उच्च शिक्षा की गुणवत्ता ही काम आती है। बदलते वक्त के साथ आज व्यावसायिक शिक्षा की जरूरत बढ़ गई है। इसलिए शिक्षा ही एकमात्र रोजगार का प्रभावी साधन बन सकती है।

राष्ट्रीय एकाता :

जब कोई समाज भौगोलिक सीमा में बद्ध रहकर पारिस्पारिक मतभेद भूलकर एकता के सूत्र में बंध जाता है तब उसे राष्ट्र की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। हर व्यक्ति राष्ट्र का अभिन्न अंग होता है। राष्ट्रीयता यह एक ऐसा भाव है, जो व्यक्ति के व्यक्तिगत हितों को त्यागकर राष्ट्र कल्याण के लिए प्रेरित करता है। हर राष्ट्र की उन्नति या अवनति वहाँ रहने वालों लोगों की राष्ट्रीय भावना की प्रबलता पर निर्भर करती है। जिस राष्ट्र में नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना प्रबल होती है वह राष्ट्र उन्नत बन जाता है। हर राष्ट्र अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय एकता का होना जरूरी है। हर नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना विकसित करने हेतू शिक्षा की अहम भूमिका बन जाती है। हर राष्ट्र अपनी-अपनी व्यवस्था बनाए रखने के लिए अपने देश के नागरिकों में शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को विकसित कराते हैं। देश में राष्ट्रीय एकता की भावना वृद्धिंगत करने की दृष्टि से उच्च शिक्षा में गुणवत्ता का होना अनिवार्य है। शिक्षा से ही राष्ट्र निर्माण की नींव पड़ती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण :

विज्ञान यानी विशिष्ट ज्ञान। अधंविश्वास यह अज्ञान का अंधकार है। शिक्षा से अंधविश्वास का अंधेरा मिट जाता है और व्यक्ति का जीवन विज्ञाननिष्ठ बन जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण ही व्यक्ति के आचार-विचार को विशिष्ट प्रकार का अनुशासन लगाता है। दुनिया में जिन बड़ी-बड़ी क्रांतियों का आविष्कार हुआ, उसका मुख्य कारण विज्ञान ही है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण मनुष्य के सुखमय जीवन की कामना करता है। छात्रावस्था में जो संस्कार होते हैं, वही

Scanned by CamScanner

संस्कार आजीवन उपयोगी सिद्ध होते हैं, जो मानव की जीवन शैली में बदलाव लाते हैं। देश की दौलत विज्ञाननिष्ठ व्यक्ति ही होता है। हर व्यक्ति का दृष्टिकोण विकसित करने के लिए उच्च शिक्षा में गुणवत्ता का होना अनिवार्य है।

स्त्री-पुरुष समानता :

शिक्षा लिंगभेद के आधार पर स्त्री-पुरुष भेदभाव को मिटा देती है। वैदिक संस्कृत काल में नारी पूज्य मानी जाती थी, लेकिन मध्यकाल में उसके इस रूप का अवमूल्यन हुआ और वह केवल भोग की वस्तु बन गई। मगर आधुनिक काल में सामाजिक सुधार, शिक्षा का प्रचार-प्रसार और नारी लेखिकाओं ने नारी आंदोलन खड़ा किया। नतीजतन उसके अधिकार और समानाधिकार की मांग बल पकड़ने लगी। इसका मुख्य कारण शिक्षा ही है। स्त्री और पुरुषों में समानता लाने में उच्च शिक्षा की अहम भूमिका है।

समस्या का समाधान :

वर्तमान जीवन में व्यक्ति अनेकानेक समस्याओं पीड़ित है। मानव जीवन के दैनंदिन क्रियाकलापों में आने वाली विभिन्न समस्याओं का समाधान करने की शक्ति शिक्षा से ही मिल जाती है। शिक्षा से ही हर संकट, मुसीबत या समस्या का सामना व्यक्ति साहस के साथ कर सकता है। शिक्षा के कारण व्यक्ति को व्यवहार ज्ञान आता है। व्यक्ति में अनेकानेक क्षमताओं का विकास करने और हर एक समस्या का मुकाबला करने के लिए आज शिक्षा की सख्त जरूरत बनती जा रही है।

सुसंस्कृत समाज निर्मिति :

पाश्चात्य संस्कृति का अंधा अनुकरण और आधुनिकता के नाम पर सामाजिक स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। इसमें सुधार लाने के लिए गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा की आवश्यकता है। शिक्षा से ही सुसंस्कृत समाज निर्मिति हो सकती है। शिक्षा से ज्ञान, विज्ञान और सुसंस्कार मिल जाते हैं, जिससे सुसंस्कृत समाज निर्मिति हो सकती है। शिक्षा में सुसंस्कार का अभाव दुराचार को जन्म देता है, इसलिए सुसंस्कृत समाज निर्मिति के लिए सुसंस्कारित शिक्षा का होना अनिवार्य है। इसलिए सुसंस्कृत समाज गठन में उच्च शिक्षा में गुणवत्ता का होना अनिवार्य बन जाता है।

ज्ञान वृद्धि का साधन:

शिक्षा और ज्ञान का संबंध अन्योन्याश्रित है। शिक्षा ज्ञान वृद्धि का साधन है। शिक्षा से ही नव निर्मिति और नव सृजन हो जाता है। अलग-अलग क्षेत्रों का ज्ञान हासिल करने का एकमात्र साधन शिक्षा ही है। आज जीवन के हर क्षेत्र का ज्ञान पाने और ज्ञान अद्यतन करने का साधन शिक्षा ही है। शिक्षा पुरानी संकल्पनाओं को नया अर्थ देती है और वैज्ञानिक आधार भी। इसी शिक्षा से ज्ञान वृद्धि हो जाती है।

पर्यावरणीय संदेवना जागृति :

मानव जीवन और पर्यावरण का बहुत ही करीबी संबंध है। मानव जीवन और पृथ्वी की जीवसृष्टि का संतुलन बिगड़ रहा है, जिससे मानव का जीवन खतरे में पड़ रहा है। इसके लिए मानव ही जिम्मेदार है। मनुष्य ने अपनी प्रगति करते समय प्राकृतिक के साथ छेड़छाड़ की, जिसके कारण जल प्रदूषण, हवा प्रदूषण, भू-प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, ऊर्जा प्रदूषण आदि प्रदूषण से पर्यावरण का संतुलन खो गया है। परिणामत: जीव सृष्टि पर आघात हो रहा है। इससे भूकंप, भूचाल, अतिवृष्टि, ओझोन ऱ्हास, अकाल, त्सुनामी जैसी प्राकृतिक घटनाओं का असर मानव जीवन पर होने लगा है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए पर्यावरण के प्रति संवेदना जागृति कराना अनिवार्य है। यह जागृति उच्च शिक्षा की गुणवत्ता से ही संभव हो सकती है।

वसुधैव कुटुंबकम् की भावना :

धरती ही परिवार है या वसुधा ही कुटुंब है। जैसे परिवार के सभी सदस्य आपसी प्रेम एवं स्नेह से रहते हैं वैसे इस वैश्विक परिवार में समग्र विश्व मानव प्रेम, स्नेह और अपनापा का व्यवहार करता है। विश्व को परिवार मानने की यह भावना विकसित करने का एकमात्र साधन शिक्षा ही है। वसुधा में रहने वाला हर व्यक्ति विश्व को परिवार मानता है। शिक्षा से ही व्यक्ति की वसुधैव कुटुंबकम् भावना में बढ़ोतरी हो सकती है।

अनुसंधान :

कहा जाता है कि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। लेकिन आविष्कार करने के लिए मनुष्य को शिक्षित होना आवश्यक है क्योंकि शिक्षा की नींव नवनिर्माण एवं नवसृजन से संबंधित है। शिक्षित व्यक्ति आविष्कार से ही नवनिर्मिति करता है। अनुसंधान नवीन ज्ञान का सृजन करता है। शिक्षा वर्तमान ज्ञान की सत्यता का परीक्षण करती है और भविष्यकालीन योजनाओं को दिशानिर्देश देती है। इतना ही नहीं, अनुसंधान से अनेक साधन-सुविधाओं की निर्मिति हो जाती है और मानव जीवन को उन्नत बना देता है। अनुसंधान की प्रक्रिया सुचारू बनाने के लिए शिक्षा आज अनिवार्य साधन बन गई है। इसलिए अनुसंधान से उच्च शिक्षा में गुणवत्ता आ जाती है।

संस्कृति का जतन :

आज देश में आतंकवाद, नक्सलवाद, क्षेत्रीयवाद, भाषावाद, भाई-भतीजावाद पनप रहा है। ऐसे में हमारी सांस्कृतिक धरोहर खतरे में पड़ गई हैं। शिक्षा से ही सांस्कृतिक धरोहर का जतन संभव है। शिक्षा ही हमारा सांस्कृतिक प्रेम जगाती है। भारतीय संस्कृति का जतन करने की दृष्टि से उच्च शिक्षा में गुणवत्ता का होना महत्वपूर्ण होता है।

सर्वधर्मसमभाव :

हमारे देश में अनेक जाति-धर्म, वर्ग एवं पंथ के लोग रहते हैं। इन सभी के रीति-रिवाज, खान-पान, रहन-सहन, धार्मिक सिद्धांत, तत्त्व, उपासना मार्ग की पद्धति में अंतर दिखाई देता है। इन अनेकताओं के बीच सर्वधर्मसमभाव का विकास करने के लिए उच्च शिक्षा में गुणवत्ता का होना अनिवार्य है। शिक्षा से ही सभी धर्म समान होते हैं और वे एक-दूसरे के साथ समानता का व्यावहार करते हैं। शिक्षा से मानव जीवन में सर्वधर्मसमभाव की भावना बढ़ जाती है। मनुष्य में समता, बंधुता, मानवता की भावना विकसित करने का एकमात्र साधन सर्वधर्मसमभाव की शिक्षा से ही है।

सकारात्मक दृष्टिकोण :

शिक्षा से व्यक्ति की आसुरी वृत्ति नष्ट हो जाती है और दैवी वृत्ति जागृत हो जाती है। अर्थात् शिक्षा से मानव जीवन में सकारात्मक

Scanned by CamScanner

विचार वास करते हैं और नकारात्मक विचार नष्ट हो जाते हैं। शिक्षा समाज और राष्ट्र को सकारात्मक दिशा की ओर अग्रेषित करती है। इतना ही नहीं, शिक्षा यथोचित बदलाव लाकर भविष्य की एक समृद्धशाली संकल्पना साकार कर सकती है। शिक्षा से मानव की सोच सकारात्मक बन जाती है। हर इन्सान में विवेक-अविवेक होता है। शिक्षा मनुष्य के अंदर का सकारात्मक विवेक जगा देती है। शिक्षा सकारात्मक बदलाव की अलख जगाने की जिम्मेदारी उठाती है। इसलिए शिक्षा में समग्रता और सकारात्मक दृष्टिकोण का होना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष:

यदि वर्तमान उच्च शिक्षा मानवीय मूल्यों की स्थापना, कौशल विकास, राष्ट्रीय एकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, स्त्री पुरुष समानता, समस्या का समाधान, सुसंस्कृत समाज निर्मिति, ज्ञान वृद्धि का साधन, पर्यावरणीय संवेदना जागृति, वसुधैव कुटुंबकम् की भावना, अनुसंधान, संस्कृति का जतन, सर्वधर्मसमभाव, सकारात्मक दृष्टिकोण आदि बातों की पहल करती है, तो उसमें गुणवत्ता आ जाती है। भारतीय शिक्षा परंपरा और पद्धति दुनियाभर ज्ञान, कौशल और आदर्श की छाप छोड़ देती है। उच्च शिक्षा नवाचारों प्रोत्साहन देती है और नए चिंतन पद्धति को बढ़ावा भी देती है। शिक्षा सिर्फ सैद्धांतिक न होकर व्यावाहारमूलक होनी चाहिए। अगर उच्च शिक्षा चरित्र निर्माण, जीवन निर्माण, व्यावसायिक कुशलता, तकनीकी कुशलता निर्माण करने में कामयाब होती है तो उसमें गुणवत्ता आ जाती है।

संदर्भ संकेत :

1. https://azimpremjuniversity.edu.in
२. डॉ. रमा अश्विनीकुमार भोसले, शिक्षणातील बदलते विचारप्रवाह, फडके पब्लिकेशन, कोल्हापुर, जनवरी, २००९, पृष्ठ ७१.
3. www.mhrd.gov.in

Scanned by CamScanner

Impact Factor – 6.261 | Special Issue - 172 | March 2019 | ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal

Multidisciplinary International E-research Journal

Organized by

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha's

Vivekanand College (Autonomous)

Kolhapur

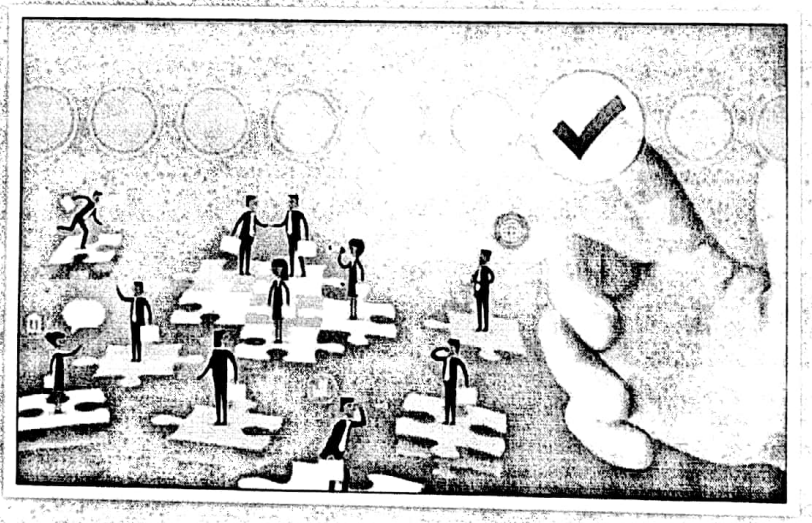

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Publisher & Printer

PRASHANT PUBLICATIONS

Office : 3, Pratap Nagar, Shri Sant Dnyaneshwar Mandir Road,
Near Nutan Maratha College, Jalgaon- 425001.
Ph.: (0257) 2235520, 2232800. **Mob.:** 9665626717, 9421636460
www.prashantpublications.com | prashantpublication.jal@gmail.com

Price : ₹ 300/-

Scanned by CamScanner